उत्तराखंड

6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

वर्ष 24 | अंक 48 | पृष्ठ : 12
मूल्य : पांच रुपये

अमर उजाला

देहरादून
सोमवार, 13 अप्रैल 2020
amarujala.com

खांसते-छींकते रखें मुंह पर तौलिया या रूमाल

खुद रहें स्वस्थ...दूसरों में न बांटें बीमारी

खेतों से पूरा पड़ जाए तो क्यों जाएं शहर

उत्तरकाशी। उत्तरकाशी के बौन गांव निवासी शुभम सेमवाल एवं नीरज सेमवाल मसूरी में होटल में इलैक्ट्रिशियन का काम करते थे। लॉक डाउन के चलते होटल कारोबार ठप पड़ने पर उन्हें वापस गांव लौटना पड़ा। इनका कहना है कि आजकल वे गांव में ही खेतों में सब्जी उगाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि गांव में उनके परिवार के पास 10-15 नाली कृषि भूमि है। खेती की मौसम की मेहरबानी पर आश्रित रहना पड़ता है। यदि गांव में ही आजीविका का मजबूत आधार बन जाता तो वे कभी पलायन नहीं करते। पूरी कोशिश करेंगे कि खेती से ही उनके खर्चे पूरे पड़ जाएं और उन्हें शहर की और रुख ही न करना पड़े।

उत्तरकाशी

5475
हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य

39465
हेक्टेयर भूमि है बंजर

गांवों में ही तलाश रहे आजीविका

गोरसाली गांव निवासी धनेश पंवार गांव में रोजगार का कोई साधन नहीं होने के कारण 5-6 साल पहले गांव के अन्य युवकों के साथ पुणे महाराष्ट्र में नौकरी करने गया था। लॉक डाउन से पहले अपने गांव पहुंचे धनेश का कहना है कि बड़े शहरों में दौड़ती जिंदगी के बीच समस्याएं बहुत हैं। साथ ही स्थाई रोजगार भी नहीं मिल पाता है। उसके परिवार की गोरसाली गांव में करीब 70 नाली जमीन है। अब उसने गांव में ही रहकर खेतीबाड़ी करने का मन बना लिया है। इसके लिए वह लॉक डाउन खुलने के बाद कृषि विज्ञान केंद्र चिन्यालीसौड़ में प्रशिक्षण लेगा और फिर अपने खेतों को आबाद कर इन्हें आजीविका का जरिया बनाएगा। उसके साथ पुणे में होटलों में काम करने वाले गोरसाली गांव के अनूप राणा, विनोद पंवार, कुशल राणा, विनय पंवार, जयराम रावत, राजेश रावत, विनोद राणा आदि युवक भी गांव में काम करने का मन बना रहे हैं। संवाद